अथैकादशोऽध्यायः

विश्वरूपदर्शनयोग

(श्रीभगवान् का विश्वरूप)

अर्जुन उवाच।
मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम्।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम।।१।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **मत् अनुग्रहाय**=मुझ पर अनुग्रह करने के लिये; **परमम्**=परम; **गुह्यम्**=गोपनीय; **अध्यात्मसंज्ञितम्**=अध्यात्म-विषयक; **यत्**=जो; **त्वया**=आपके द्वारा; **उक्तम्**=कहा गया; **वचः**=वचन; **तेन**=उससे; **मोहः**=अज्ञान; **अयम्**=यह; **विगतः**=नष्ट हो गया; **मम**=मेरा।

अनुवाद

अर्जुन ने कहा, प्रभो! आपने कृपापूर्वक मुझसे जिस अध्यात्म-विज्ञान का रहस्यमय उपदेश कहा, उसे सुनने से मेरा यह मोह नष्ट हो गया है।।१।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण सब कारणों के परम कारण हैं—यह अध्याय इसी रहस्य को उद्घाटित करता है। वे महाविष्णु के भी कारण हैं और उन्हीं से प्राकृत-सृष्टि उत्पन्न होती है। श्रीकृष्ण अवतार नहीं हैं; वे सम्पूर्ण अवतारों के उद्गम हैं, अवतारी हैं। पूर्ववर्ती दसवें अध्याय में यह तत्त्व सम्पूर्ण रूप से प्रतिपादित हो चुका है।

अब, जहाँ तक अर्जुन का सम्बन्ध है, वह स्वयं कहता है कि उसका मोह नष्ट